

नाश्ते वाली ट्रेन

CooCubby · हिन्दी · The Breakfast Train



गुड मॉर्निंग, कब्बी!

पीले पर्दों से सूरज झाँक रहा था। पापा बेयर बोले, "गुड मॉर्निंग, कब्बी! चलो, नाश्ता करें।"



कब्बी को दौड़ना है।

कब्बी को दौड़ना था, कूदना था, गोल-गोल घूमना था। बैठना बिल्कुल नहीं था। पापा बेयर बोले, "बस एक गाना खत्म होने तक बैठो।"



आ गई नाश्ते वाली ट्रेन!

पापा बेयर ने चम्मच को ट्रेन बनाया। छुक-छुक! "आ गई नाश्ते वाली ट्रेन!" कब्बी ने मुँह खोला। स्टेशन खुल गया!



अब पिप की बारी!

पिप खरगोश उछलकर पास आया। "मैं ट्रेन चलाऊँ?" उसने चम्मच आगे बढ़ाया। छुक-छुक!



अब मैं ट्रेन चलाऊँगा!

"मेरी बारी!" कब्बी बोला। उसने अपने पंजे से चम्मच पकड़ा। चम्मच डगमगाया। थोड़ा-सा खाना गिर गया।



डगमगाए तो कोई बात नहीं।

"डगमगाए तो कोई बात नहीं," पापा बेयर बोले। कब्बी ने फिर कोशिश की। छुक-छुक... ट्रेन स्टेशन के अंदर!



ट्रेन के पहिए, केले वाले!

पापा बेयर ने केले के गोल टुकड़ों से पहिए लगाए। कब्बी ने एक पहिया खाया। फिर एक और। गोल-गोल, मीठे-मीठे!



दूध की एक घूँट। आह!

कब्बी ने अपने पीले कप से गरम दूध की एक बड़ी घूँट ली। "आह!" वह बोला। उसके मुँह पर दूध की मूँछ बन गई!



हो गया! पोंछो, पोंछो।

"हो गया!" कब्बी ने मुलायम कपड़े से अपने पंजे और मुँह पोंछे। टेबल थोड़ी गंदी हो गई थी। कोई बात नहीं!



अब कब्बी दौड़ सकता है!

"अब तुम दौड़ सकते हो," पापा बेयर बोले। और कब्बी दौड़ा, कूदा और गोल-गोल घूमा। ऐसे ही खेलते-खेलते वह घास वाले मैदान तक पहुँच गया!



CooCubby

Free picture stories for little ones, in 8 Indian languages

coocubby.com